लेडीवेंस

बाबा मायाराम

शाम का समय है। बच्चों की टोली गलियों से गुज़रते हुए एक झोंपड़ी के पास रुकती है और फिर थोड़ी हिम्मत जुटाकर कहती है – "दादा-दादा राम-राम, तेरी मूँछें सौ ग्राम।" इतना कहते ही बच्चे वहाँ से छू हो जाते हैं। कहीं छुप जाते हैं। इधर एक पकी दाढ़ी-मूँछों वाला बुज़ुर्ग घर से निकलकर बाहर आता है और लाठी पटककर ज़ोर-से कुछ चिल्लाता है – ऐंड वेंड...लेडीवेंस... बस ये दो शब्द ही समझ में आते हैं।

मध्यप्रदेश के पलिया-पिपरिया गाँव का यह एक आम दृश्य है। यह गाँव दूधी नदी के किनारे बसा है। लेडीवेंस यानी अमरसिंह दादा। पर, सब उन्हें लेडीवेंस नाम से ही पहचानते हैं। यह नाम कब और कैसे पड़ा, इसकी एक कहानी है। आज उनकी उम्र 80 से ऊपर होगी। वे अँग्रेज़ों का ज़माना देख चुके हैं। वे कई अँग्रेज़ी जानने वालों के सम्पर्क में आए होंगे। इसलिए उनकी ज़बान पर अँग्रेज़ी के कुछ टूटे-फूटे शब्द आ गए हैं। इन्हें जिस फर्राटेदार अन्दाज़ व हाव-भाव से वे बोलते हैं, उससे अलग समाँ बँध जाता है। लोगों की हँसी फूट पड़ती है। खासतौर पर बच्चे उनके पीछे घूम-घूम कर उनका मज़ा लेते हैं।

उन्होंने कई कामों पर हाथ आज़माया है – कभी टीन-टप्पर की मरम्मत की। कभी बच्चों को फोटो फिल्म का खेल दिखाया। सिर पर 20-25 किलो वज़न का बक्सा रखकर वे गाँव-गाँव जाते। फोटो फिल्म का टिकट 5 पैसे और 10 पैसे का होता था। इसमें हीरो-हीरोईन व स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की फोटो हुआ करती थीं। जैसे, हेमामालिनी, धर्मेन्द्र और झाँसी की रानी आदि। वे इस खेल को मढ़ई और स्थानीय हाट-बाज़ारों में भी दिखाया करते थे। इससे उनकी एक अलग पहचान बन गई थी। इसके अलावा कभी फुरसत मिली तो नदी में मछलियाँ पकड़ीं। पीठ पर एक पीपा टाँगे-टाँगे उन्होंने पैदल ही न जाने कितने गाँव नापे होंगे। इस पीपे में छैनी, हथौड़ी और छोटे-मोटे औज़ार होते थे। वे गाँवों में रोज़ाना काम आने वाली चीज़ों की मरम्मत करते थे। टूटे-फूटे बर्तन जोड़ना, सन्दूक-पीपा में कुन्दा लगाना। इस काम में उन्हें बच्चों की मदद मिलती थी। गिटपिट फर्राटेदार और बेमतलब के शब्दों का खास तरह से बोलकर वे लोगों को अपनी ओर खींच लेते थे। वे लम्बी साँस खींचकर दम लगाकर हर वाक्य के शुरू एवं अन्त में अपने अन्दाज़ में लेडीवेंस ज़रूर जोड़ते। यह उनका तकिया कलाम था। यही उनकी छाप भी बन गया।

लेडीवेंस कहाँ से और कब उनकी जुबान पर चढ़ा, कहना मुश्किल है। लेकिन लगता है यह अँग्रेज़ी के लेडीज़ एंड जेंटलमेन शब्द का टूटा-फूटा रूप है।

बोझिल माहौल को हल्का-फुल्का बनाना लेडीवेंस के लिए चुटकियों का खेल है। गाँव की मुश्किल ज़िंदगी के बीच लेडीवेंस एक मनोरंजन करने वाले की भूमिका अदा करते रहे हैं। आज भी कर रहे हैं।

तुम्हारे इलाके में भी फेरीवाले आते होंगे? क्या वे भी ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए कोई मज़ेदार तरीका अपनाते हैं? क्या तुम्हारी किसी फेरीवाले से दोस्ती है?